AIDS InfoNet www.aidsinfonet.org

एच.आई.वी. कितना खतरनाक है? (How Risky Is It?)

Fact Sheet Number 152
फैक्टशीट संख्या 152

मुझे एच.आई.वी. से संक्रमित होने का कितना जोख़िम है?
ज्यादातर लोग एच.आई.वी. के परागमन के विषय में जानते हैं (फैक्टशीट 150 देंखे)। वे सुरक्षित यौन की मार्गदर्शिका के विषय में भी जानते हैं (फैक्टशीट 151 देंखे)। हांलाकि फिर भी वे लोग संक्रमण का शिकार हो सकते हैं। ऐसा दुर्घटनावश या फिर उनके जोखिमपूर्ण व्यवहार के कारण हो सकता है। जब ऐसा होता है तब वे जानना चाहते हैं कि उन्हें एच.आई.वी. संक्रमित होने की कितनी संभावना है?

एच.आई.वी. संक्रमण होने की कोई गारंटी नहीं है।

आप तब तक अपने एच.आई.वी. असंक्रमित होने के विषय में आश्वस्त नही हो सकते जब तक की यह शत प्रतिशत निश्चित नहीं हो कि आप किसी जोखिमपूर्ण व्यवहार में शामिल नहीं रहे हैं तथा आप एच.आई.वी. संक्रमित द्रव्यों के संर्पक में नहीं आये हैं।

अपने एच.आई.वी. असंक्रमित होने के विषय में आश्वस्त होने का एक मात्र उपाय एच.आई.वी. की जाँच ही है। एच.आई.वी. होने के किसी भी जोख़िम के सर्म्पक में आने के 3 महीने तक इंतजार करना चाहिए। इसके बाद आप पुनः एच.आई.वी. की रक्त जाँच करा लें (फैक्टशीट 102 देंखे)।

आपको एच.आई.वी. संक्रमण के सर्म्पक में आने की आशंका हो सकती है यदि आपने सूई का आदान प्रदान किया है, या फिर आपको रक्त चढाया गया हो या व्यवसायिक गतिविधियो के दौरान या फिर असुरक्षित यौन क्रिया की हो। ऐसी स्थिति में आप अपने स्वास्थ्य सेवाप्रदाता से तुरन्त सलाह लें। भयभीत नही हो, आप व्यवसायिक असुरक्षा के लिए पोस्ट एक्सपोजर प्रोफाइलेक्सीस (पी. ई. पी.) लेना शुरू कर सकते है जिससे कि संक्रमण को होने से रोका जा सके एवं अन्य स्थितियों से निपटने के लिए आप अपने स्वास्थ्य सेवाप्रदाता की सलाह अनुसार कार्य करें तथा साथ ही आप आई.सी.टी.सी. (स्वैच्छिक जाँच एवं परामर्श केन्द्र) के परामर्शदाता से जितने शीघ्र हो सम्पर्क करें। पोस्ट एक्सोजर प्रोफाइलैक्सीस के बारे में अधिक जानकारी फैक्टशीट 156 में दी गई है।

संख्याओं का क्या अर्थ है?
1980 के बाद के तथा शुरूआती 1990 के दशकों में विभिन्न प्रकार के जोखिमों के सम्पर्क में आने से होने वाले एच.आई.वी. संक्रमण के खतरों का अनुमान लगाने के लिए कई अध्ययन किये गए हैं। यह गणनाएं सिर्फ आम खतरों का अंदाजा दे सकती हैं। इनसे सिर्फ ये पता चलता है कि कौन से गतिविधियों से अधिक या कम खतरा है। परन्तु इनसे आपको संक्रमण होने के बारे में पता नही चलता है।

उदाहरण के लिए यदि 100 में 1 बार एच.आई.वी. संक्रमण का खतरा है तो इसकाअर्थ यह नही है कि आप 99 बार उस जोखिमपूर्ण व्यवहार में बिना किसी संक्रमण के खतरे के लिप्त रह सकते हैं। आप एक बार में भी एच.आई.वी. से संक्रमित हो सकते है और ऐसा आपके पहली बार ही जोखिम क्रियाकलाप के दौरान हो सकता है।
इस तरह के अध्ययन एक खास समूह पर आधारित थे और ऐसा नही कहा जा सकता कि इस तरह का ही नतीजा किसी और समूह के लिए या फिर आम जनता के लिए भी एक जैसा हो।

किस तरह के गतिविधियों में सबसे ज्यादा जोख़िम है?
सबसे ज्यादा एच.आई.वी. संक्रमण का खतरा सुईयों या इसी तरह के नशीली दवाओं के सेवन हेतु उपयोग में लाए जाने वाले सामान का आदान प्रदान किसी संक्रमित व्यक्ति के साथ करने से होता है। जब आप किसी के साथ सुईयों का आदान प्रदान करते है तब आपके रक्त प्रवाह में किसी और का खून जाने की संभावना काफी बढ जाती है। सूईयों के आदान प्रदान से हेपेटाईटीस विषाणु

(''बी'' एवं ''सी'') के परागमन की भी संभावना होती है। मात्र किसी को देखकर आप ये नहीं पता लगा सकते कि आपका भागीदार एच.आई.वी. संक्रमित है या नही (यहाँ तक संक्रमित व्यक्ति को भी इस बात का पता नहीं होता कि उसे संक्रमण है)। इस तरह से एच.आई.वी. संक्रमण फैलने का माध्यम 90 प्रतिशत से अधिक प्रभावशाली है।

इसके बाद एच.आई.वी. संक्रमण का सबसे ज्यादा खतरा **असुरक्षित यौन संबंध** (बिना कंडोम के यौन क्रिया) से है। असुरक्षित यौन संबंध में सबसे ज्यादा जोख़िम ग्राही गुदा मैथुन से होता है। गुदा की झिल्ली काफी पतली होती है। यौन संबंध के दौरान ये बहुत आसानी से क्षतिग्रस्त हो जाती है (जब लिंग गुदा के अन्दर प्रवेश करता है)। इससे एच.आई.वी. के विषाणु बहुत आसानी से शरीर में प्रवेश कर जाते है। गुदा संभोग में दाता जो की सक्रिय भागीदार है को संक्रमण का खतरा ग्राही से कम होता है फिर भी इसमें साधारण योनि संभोग से ज्यादा खतरा होता है।

इसके बाद ज्यादा खतरा **ग्रहणशील यौनिक संभोग** (कंडोम रहित) में होता है। योनि की झिल्ली गुदा की झिल्ली से अधिक मजबूत होती है फिर भी संक्रमण के प्रति काफी संवेदनशील होती है। और ये भी यौन क्रिया से क्षतिग्रस्त हो सकती है। यदि योनि में सूजन या संक्रमण है तब संक्रमण (यौन संचारित संक्रमणों) का खतरा बढ़ जाता है – यौन संचारित संक्रमणों के कारण योनि के खुले घावों से एच.आई.वी. अथवा हेपेटाईटीस ''बी'' /''सी'' का संचरण आसानी से हो जाता है।

संक्रमण का खतरा ग्राही भागीदार के लिए ज्यादा होता है। हालांकि गुदा अथवा योनि संभोग में सक्रिय दाता भागीदार को भी कुछ खतरा होता है। एच.आई.वी. के विषाणु लिंग में किसी खुले घाव के द्वारा अथवा लिंग के खुलने के स्थान पर गीली झिल्ली से अथवा अग्रभाग में मौजद श्लेष्मल झिल्ली की कोशिकाओं के द्वारा अथवा लिंग के मुख द्वार से लिंग में प्रवेश करने की संभावना होती है।

मुख मैथुन से संक्रमण कैसे होता है?

मुख मैथुन के द्वारा एच.आई.वी. संक्रमण के फैलने के विषय में कई अध्ययन किये गये हैं। परन्तु इनसे कोई ठोस निष्कर्ष नही निकलता है। यदि कोई व्यक्ति असुरक्षित मुख मैथुन या योनि मुख मैथुन में लिप्त है और उसके मुंह के अन्दर कोई खुला घाव या जख्म (संक्रमण) हो तब उसे संक्रमण हो जाता है। इस तरह कि क्रिया में संलग्न व्यक्ति यदि योनि द्रव्य (जो कि एच.आई.वी. संक्रमित हो) को निगल रहा हो तो उसे भी संक्रमण होने का कुछ खतरा होता है, यदि निगलने वाले व्यक्ति के अमाशय या आँतों में कोई घाव है जहाँ से एच.आई.वी. के विषाणु प्रवेश कर सकते हैं। हालाकि हमारे पेट में पी एच (अम्लीय माध्यम) कम होने से विषाणु असक्रिय होते है। लेकिन जब ये विषाणु पित्त नमक (जो कि अमाशय तथा आँतों के मार्ग में काफी मात्रा में होता है) के सम्पर्क में आते हैं तो एच.आई.वी. के वसा से निर्मित खोल अलग हो जाती है, जिस के कारण अमाशय तथा आँतों के मार्ग में इनका पनपना बहुत मुश्किल होता है।

निम्नलिखित बाते स्पष्ट हैः

- मुख मैथुन के द्वारा भी एच.आई.वी. से संक्रमण की संभावना होती है खतरा शून्य नहीं होता है।
- मुख मैथुन के द्वारा एच.आई.वी. से संक्रमण का खतरा बहुत ही कम होता है। अन्य प्रकार से किये गए असुरक्षित संभोग के तुलना में इस तरह के संभोग में खतरा बहुत कम होता है। हालांकि मुख मैथुन में अन्य दुसरी बीमारियाँ जैसे सीफलीस हो सकती हैं।

किन बातों से एच.आई.वी. संक्रमण का खतरा बढ जाता है?

सीफलीस रोग के होने से एच.आई.वी. विषाणु के संचरण का खतरा बढ जाता है। ऐसे व्यक्ति जिन्हें सीफलीस है उन्हे एच.आई.वी. संक्रमण का खतरा औसत से ज्यादा हो जाता है। सीफलीस से बडे पीडादायक घाव भी हो जाते है। सीफलीस के घावों होने के कारण किसी व्यक्ति को बडी आसानी से एच.आई.वी. संक्रमण हो सकता है। हर्पीज़ (सिम्पलेक्स संक्रमण (खाज) से भी घाव होता है जिससे कि एच.आई.वी. से संक्रमण होने की संभावना रहती है (फैक्टशीट 508 देखे)।

सीफलीस अथवा खाज के सक्रिय होने से किसी व्यक्ति के शरीर में एच.आई.वी. की मात्रा को बढा देता है जिससे कि दुसरे व्यक्तियों में परागमन की संभावना काफी बढ जाती है।

एच.आई.वी. परागमन तथा संक्रमण होने के और भी अन्य कई कारण है।

- जब एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति व्रीव संक्रमण की अवस्था में होता है तब उसके रक्त में विषाणुओं की संख्या काफी अधिक होती है। इससे एच.आई.वी. संक्रमण की संभावना बढ जाती है दुर्भाग्यवश किसी को अपने एच.आई.वी. संक्रमण की शुरूआती अवस्था का पता नही होता है। किसी संक्रमित व्यक्ति को देखकर ये नही बताया जा सकता है कि वह संक्रमित है।
- जब किसी असंक्रमित व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक प्रणाली कमजोर हो जाती हो ऐसा किसी लम्बी बिमारी या किसी सक्रिय संक्रमण जैसे हर्पीज़ (खाज) सीफलीस या फल्यू (जुकाम) के कारण होता है।
- जब किसी व्यक्ति का खुला घाव संक्रमित द्रव्यों के संर्पक में आता है। ऐसा किसी ठंड के कारण हुये घावों से, जननांगो में हुये खाज से, मुँह में घाव से, या किसी और तरह से त्वचा के कटने से होता है।
- संक्रमित खून के संर्पक में आने पर (खून चढाने या फिर व्यवसायिक जोखिम के द्वारा)
- जब असंक्रमित सक्रिय पुरूष साथी का खतना नही हुआ हो ।

अंतिम कथन

शोधकर्त्ताओं ने एच.आई.वी. के परागमन के जोखिम का अनुमान लगाया है। इन अनुमानों से आपको यह पता चल सकता है कि किन क्रगतिविधियों में अधिक अथवा कम खतरा है। इनसे ये पता नही चल सकता कि कौन सी क्रियाएँ सुरक्षित हैं या किन क्रियाओं आप बिना संक्रमित हुए कितनी बार कर सकते है। संक्रमण से बचने का सबसे अच्छा उपाय किसी भी यौनिक क्रिया के दौरान कंडोम का सही एवं निरंतर प्रयोग करना है एवं सुइयों के आदान प्रदान से बचना है। यदि आपको लगता है कि आप एच.आई.वी. के संपक्र में आये हैं तो आपको 3 महीने तक इन्तजार करने के बाद इसकी जाँच करा लेनी चाहिए।

पुर्नावलोकन जँन 25, 2007